

17/05/24

का पत्र ही रूप

पगावली पेश-दुई-वाडी-व-वाडी-
 वरील अनुपास्थित। वार वार
 आवक लागवाई-गई वार-वार
 आवक-लागवने के बाद-मी-वाडी-
 व-वाडी-वरील गोर-हापिर-
 लिहाजा. वाडी व-वाडी-वरील-मी-
 अनुपास्थिति-में वाडी-का-वाड-
 अदन-हापिरी-अदन-पैरवी-में
 खारिप-डिखा जाता-है। पगावली-
 प्रसन्न शुभार-दी. नम्र-सेकन-
 होकर वाजिल-दफतर-है। रूप